Dr. Vandana Kumari
Associate Professor
Dept of Philosophy
H. D. Jain College, Ara
B.A - Part I Paper II
Metaphysics and Epistemology

GRB BOOKS

Notes 1 / "Darwin's theory of Biological evolution" (डार्विन का विकासवाद)

जीवशास्त्रीय विकासवाद के इतिहास में डार्विन का सिद्धान्त ऐतिहासिक महत्व रखता है। डार्विन के विकास सिद्धान्त का प्रभाव दर्शन पर काफी पड़ा है।

जीवशास्त्रीय विकासवाद वह सिद्धान्त है जो यह मानता है कि संसार के विभिन्न प्राणी जीवों का वर्तमान रूप विकास का परिणाम है। अर्थात सभी जीव परिवर्तनशील हैं।

डार्विन के सिद्धान्त के अनुसार जीवों के बीच कोई पारमार्थिक या चिरंतन भेद नहीं है। आरम्भ में कुछ [illegible] की तरह जीव कोष उत्पन्न हुए और उन्हीं के क्रमिक विकास के फलस्वरूप आज इतने अधिक और विभिन्न प्रकार के जीव हैं। विकास का क्रम ऐसा है कि एक जाति के जीव परिवर्तित होते होते आगे पीढ़ियों में इतने भिन्न हो जाते हैं कि उनकी दूसरी जाति ही हो जाती है। बहुत से जीवशास्त्री कहते हैं कि आदि जीव-कोषों की उत्पत्ति निर्जीव द्रव्य से हुई है, किन्तु यह घटना कैसे और क्यों संपादित होती है, इसकी पर्याप्त व्याख्या उनके पास नहीं है।

जीवशास्त्रीय विकासवाद के दो मुख्य कार्य हैं — (I) विभिन्न जीवों के विकास की व्याख्या और (II) विभिन्न जीव योनियों के विकास की। जीव और उनकी जातियाँ योनि

सुगम पास-बुक

Notes
GRB BOOKS

के विकास को जीवशास्त्रीय विकासवाद सत्य मानता है और इन नियमों की खोज करता है जिससे इनका विकास क्रम संचालित होता है।

विकासवाद की दो मुख्य समस्याएँ हैं। पहली समस्या विकास की वास्तविकता को लेकर है और दूसरी इसकी व्याख्या लेकर। (1) विकास वास्तविक है, इसका क्या प्रमाण है? (2) और यदि वास्तविकता का प्रश्न है सभी विकासवादी एकमत हैं कि विकास वस्तुतः होता है। किन्तु विकास की व्याख्या के विषय में इनमें बहुत मतभेद है। इन दोनों समस्याओं के समाधान में डार्विन की महत्वपूर्ण देन है।

जैवी विकास की वास्तविकता प्रमाणित करने के लिए वर्षों के अनुसंधान के बाद वास्तविक निरीक्षण और प्रयोग द्वारा डार्विन ने प्राणिजगत के इतिहास में प्रचुर मात्रा में ऐसी घटनाक्रमों को ढूंढ निकाला है जिनके अस्तित्व की व्याख्या विकास को सत्य मानने पर ही हो सकती है। विकास की वास्तविकता सिद्ध करने के लिए डार्विन ने अनेक प्रमाण दिये हैं—

1. पृथ्वी के अन्दर पत्थरों की कई तहें मिलती हैं। तहों के बीच में तत्कालीन जीवों की अस्थियों के ध्वंसावशेष मिलते हैं तहों की प्राचीनता के अनुसार उनमें विद्यमान अस्थियों की प्राचीनता निश्चित की जाती है। अस्थियों में क्रमिक

पास-बुक
APPROACH TO GET SUCCESS IN U.P. BOARD EXAM

GRB BOOKS

विकास दीख पड़ता है, अर्थात बाद वाली आयियों, पहले वाली आतियों से अधिक जटिल और उन्नत होती हैं। जातियों के इस अध्ययन से प्रमाणित होता है कि (1) जीव-जन्तुओं का इतिहास अत्यन्त ही प्राचीन है और (2) उनका प्रादुर्भाव एक पूर्णविकासित रूप में न होकर क्रमिक विकास का फल है।

2. प्राणियों की वर्तमान अवस्था का अध्ययन भी विकास-सिद्धान्त को प्रमाणित करता है। अपनी यात्रा के क्रम में डार्विन ने पाया कि विश्व के भिन्न-भिन्न देशों में फैले कुछ वनस्पतियों तथा जीवों में विभिन्नता के साथ-साथ पर्याप्त समानता है उनकी समानता का कारण एक उद्गम और विभिन्नता का कारण उनकी विभिन्न भौगोलिक परिस्थितियाँ हैं।

3. माता के गर्भ में विभिन्न प्राणियों का समान रूप से विकसित होना भी विकास सिद्धान्त को पुष्ट करता है। डिम्ब शास्त्र बतलाता है कि विभिन्न प्राणियों के डिम्बों का क्रमिक विकास होता है और यह विकास बहुत कुछ एक-सा होता है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि विविध प्राणियों का विकास एक ही मूल स्रोत से हुआ है जिसके कारण और विषयों में काफी अन्तर होते हुए भी उनकी

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS IN U.P. BOARD EXAM

Notes
GRB BOOKS

आदिम अवस्था में असमानता है।

4 आधुनिक जीवों के शरीर को देखने पर पता लगता है कि उनके अन्दर कितनी ऐसी चीजें हैं जिनका कोई उपयोग उनके लिए नहीं है जैसे - मनुष्य के शरीर में रोयें होते हैं जिनसे कोई लाभ नहीं है। डार्विन का कहना है कि मनुष्य का विकास इससे नीचेवाले पशुओं से हुआ है। इसलिए इसके शरीर के अनुपयोगी अंग अपने पूर्वजों की अवशिष्ट रहा है। इन पूर्वजों में इनका उपयोग था किन्तु मनुष्य में नहीं है, चूँकि मनुष्य इन्हीं से विकसित हुआ और इनसे सम्प्राप्त होकर मनुष्य के शरीर में वे अबतक चले आ रहे हैं।

विकास की वास्तविकता प्रमाणित करने के बाद डार्विन ने विकास के कारण के बारे में बताया है। विकास-प्रक्रिया की प्रकृति के विषय में इनके विचार यंत्रवादी और प्रकृतिवादी हैं। यंत्रवादी इसलिए है कि वे मानते हैं कि विकास-प्रक्रिया यंत्रवत चलती रहती है उसके अन्दर कोई उद्देश्य या लक्ष्य नहीं है। प्रकृतिवादी इसलिए कि इनके अनुसार इसका निर्देशक कोई अलौकिक पदार्थ नहीं बल्कि प्राकृतिक नियम हैं जो बिना किसी बाहरी सहायता या हस्तक्षेप के विकास क्रम को संचालित करते हैं। विकास की प्रगति सरल से जटिल की ओर

गम्स पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS IN U.P. BOARD EXAM

होती हैं। वे मानते हैं कि किसी तरह ईश्वर ने ही निर्जीव जड़ तत्वों में प्राण डेकर जीव-कोषों को उत्पन्न किया और जब जीव-कोष बन गए तब से अब जीवित प्राकृतिक नियमों द्वारा अपने-आप विकसित होते रहे हैं। प्रकृति से उनका तात्पर्य है जगत से जो त्रिकाल में व्याप्त अनुभव सजीव सभी पदार्थों की समष्टि है और विकास-प्रक्रिया का संचालन नियंत्रण और निर्देशक प्राकृतिक नियमों के अनुसार होता है। विकास के आधारभूत नियमों की संख्या चार है। ये हैं—

1. जीवन संग्राम
2. प्राकृतिक निर्वाचन
3. शारीरिक परिवर्तन
4. आनुवांशिकता

1. जीवन संग्राम — डार्विन के अनुसार जीवन-संग्राम एक विश्व-व्यापी सत्य है। सभी जीव अपनी रक्षा के लिए सदा प्रयत्नशील रहते हैं और इनके प्रयत्नों के चलते प्रकृति में संग्राम या संघर्ष छिड़ा रहता है खाद्य सामग्री और निवास-स्थान की अपर्याप्तता से जीवन संग्राम उत्पन्न होता है। डार्विन का कहना है कि यदि सभी जिन्दा रहे तो दुनिया में न रहने की जगह मिलेगी न खाने के लिए पर्याप्त खाद्य सामग्री अत: इनमें से

युगम पास-बुक

कुछ का नाश आवश्यक है। यही नाश जीवन-संग्राम द्वारा होता है जीवन के लिए संघर्ष होता है और इसमें कुछ नष्ट होते हैं और कुछ बच जाते हैं। अतः सबको अपना अस्तित्व बनाये रखने के लिए संग्राम करना पड़ता है।

2. प्राकृतिक निर्वाचन :-

योग्यतम की जीवन रक्षा को ही डार्विन प्राकृतिक निर्वाचन भी कहते हैं प्रकृति में योग्य का निर्वाचन और अयोग्य का निष्कासन होता है। इस तरह का निर्वाचन मनुष्य पालतू जानवरों तथा उपयोगी पौधों के विषय में खुद करता है। अपने काम लायक जानवरों को कुछ चुन लेता है उनकी रक्षा करता है और ~~उनको~~ सन्तान पैदा करने का मौका देता है। किन्तु जो उसके काम लायक नहीं है उन्हें वह छोड़ देता है। इसप्रकार प्राकृतिक निर्वाचन जीवों की जीवन रक्षा होती है और दाम्पत्य-निर्वाचन द्वारा संतानोत्पत्ति होती है। दोनों का सम्मिलित परिणाम होता है वातावरण के अनुकूल प्राणियों की वृद्धि।

3. शारीरिक परिवर्तन

~~डार्विन~~ डार्विन का कहना है कि जीवों की शारीरिक बनावट और व्यापार में सदा परिवर्तन होते रहते हैं। इन परिवर्तनों के कारण हैं किन्तु उनका पूर्ण और निश्चित ज्ञान हमें प्राप्त नहीं है। शारीरिक परिवर्तनों का सर्वप्रथम दो भेद डार्विन करते हैं — वंशागत और वातावरण से प्राप्त। वंशागत

परिवर्तन जीवों को अपने पूर्वजों से मिलते हैं और दूसरे प्रकार के परिवर्तन वे हैं जो वातावरण के प्रभाव से उत्पन्न होते हैं। पहले का डार्विन निश्चित और दूसरे को अनिश्चित कहते हैं। इनका मत है कि योनियों का विकास सूक्ष्म क्रमिक परिवर्तनों के संचय द्वारा होता है, अचानक परिवर्तनों के कारण नहीं।

4. आनुवंशिकता →

डार्विन के अनुसार किसी नई जीव-योनि का प्रादुर्भाव आनुवंशिकता नियम के द्वारा होता है। इस नियम के अनुसार जो परिवर्तन माँ-बाप के शरीर में होते हैं वे उनकी संतानों में संक्रांत हो जाते हैं। इस प्रकार एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में संक्रांत होते-होते कई पीढ़ियों में जाकर अत्यन्त ही सूक्ष्म परिवर्तनों के संचयीकरण का परिणाम होता है कि कोई बिल्कुल ही नया अंग बन जाता है। जिससे परिवर्तित जीव अपने प्रारम्भिक पूर्वजों से नितान्त भिन्न एक नयी जाति का प्रादुर्भाव करते हैं। यह बात हितकर और हानिकारक दोनों प्रकार के परिवर्तनों के साथ होती है। इसके फलस्वरूप उपयोगी अंग उत्पन्न होने से जीवों का अस्तित्व कायम रहता है, अन्यथा उसका सर्वनाश हो जाता है। इन्हीं बातों को संक्षेप में डार्विन

GRE BOOK
गम्स पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS IN U.P. BOARD EXAM

Notes
GRB BOOKS

~~यह कहकार व्यक्त करते हैं कि जीवन - संघर्ष में साधन - सम्पन्न जातियों की रक्षा द्वारा~~ जीवन - संघर्ष में साधन सम्पन्न जातियों की रक्षा द्वारा ~~जीव यानियों की रक्षा~~ द्वारा जीव - योनियों की उत्पत्ति होती है।

डार्विन के विकासवाद का समर्थन और विरोध दोनों ही काफी उत्साह के साथ लोगों ने किया। डार्विन के विकास सिद्धान्त में कुछ त्रुटियाँ हैं जो इसप्रकार हैं—

1. डार्विन जैसे वैज्ञानिक के लिए यह कहना शोभा नहीं देता कि किसी तरह ईश्वर ने निर्जीव कोषों में प्राण डाल दिया। जीव की आदि उत्पत्ति के निश्चित ज्ञान का अभाव डार्विनवाद को दुर्बल बना देता है।

2. डार्विन का विकासवाद यंत्रवादी होने के कारण ग्राह्य नहीं है क्योंकि यंत्रवादी विचार विश्व या इसके किसी क्षेत्र, विशेषकर प्राणीजगत की व्याख्या के लिए अनुपयुक्त है सामंजस्य और व्यवस्था की व्याख्या के लिए सर्वज्ञ नियंता के अस्तित्व में विश्वास करना आवश्यक है।

3. डार्विनवाद की तीसरी त्रुटि यह है कि विकास प्रक्रिया में नूतनताओं के प्रादुर्भाव की व्याख्या वह नहीं कर पाता है। जीव जगत में वनस्पतियों, पशुओं और मनुष्यों में काफी भेद है और किसी को आवृत्ति नहीं कहा जा सकता। अतः विकासक्रम

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS IN U.P. BOARD EXAM

Notes

GRB BOOKS

स्वतन्त्राओं के प्रादुर्भाव को स्पष्ट नहीं कर सकता और जब यह स्पष्ट है, कि इसकी व्याख्या डार्विनवाद जैसे यंत्रवादी विकास से नहीं हो सकती।

4. फ्रेंच विद्वान बर्गसाँ का आक्षेप है कि यंत्रवादी होने के कारण डार्विनवाद यह भी नहीं बता सकता कि नितांत भिन्न परिस्थितियों में समान रचनाएँ क्यों उत्पन्न होती है।

5. कुछ आलोचकों ने डार्विन के सिद्धान्तों की एक एक करके परीक्षा की है और उनका निष्कर्ष है कि वे पूर्णत: सत्य नहीं है।

किन्तु इससे डार्विन का महत्व कम नहीं होता। विकास की वास्तविकता में विद्वानों का विश्वास स्थापित करने का श्रेय डार्विन को ही है।